7

गा कर आराधना

परमेश्वर की आराधना में गाना मसीहियत के महान आनन्दों में एक है। यीशु और उसके प्रेरितों (*humneo*; मत्ती 26:30; मरकुस 14:26) ने भजन गाया, जैसे पौलुस और सीलास ने भी गाया (प्रेरितों 16:25)। स्वर्ग के लोगों को भी यह करते हुए दिखाया गया है (यू.: *ado*; प्रकाशितवाक्य 5:9; 14:3; 15:3)।[1]

इफिसियों 5:19, कुलुस्सियों 3:16 और याकूब 5:13 में मसीही लोगों को इसके लिए प्रोत्साहित किया गया है। यह आयत बताती है कि हमारे गाने में एक दूसरे से बातें करना और दिल से होना चाहिए। हमें मसीह के वचन का गाना एक दूसरे को सिखाना और समझाना आवश्यक है। हमारे गाने में प्रभु को धन्यवाद होना, अपने आनद को उठाना और स्तुति करना हो सकता है।

मसीही गतिविधियों में केवल गाना ही है जिसमें पूरी मण्डली मिलकर एक आवाज में भाग ले सकती है। अन्य किसी मसीही गतिविधि में गाने की तरह आराधना के अनुभव में सब मिलकर कुछ नहीं कर सकते। गीत परमेश्वर की महिमा करते हुए आत्माओं के मिलने से, सुर में आवाजों को मिलाना मसीही आराधना के सबसे आन्नद भरे और ऊंचा उठाने वाले क्षण ला सकता है।

हमारे गाने में कई विषय शामिल किए जा सकते हैं:

- उपदेश
- उम्मीद, आशा, स्वर्ग
- सांत्वना और आश्वासन
- निर्भरता, उपाय, भरोसा, अगुआई
- निष्ठा, पवित्रिकरण, और समर्पण
- प्रोत्साहन और निमन्त्रण
- वफ़ादारी
- मिशन, आत्मा बचाना और सेवा
- शांति और संतुष्टि
- परमेश्वर की महिमा और प्रशंसा
- सहायता के लिए याचना, विनतियां, आवेदन और अपीलें
- शिक्षा
- धन्यवाद और आनन्द करना
- भरोसा, विश्वास, साहस, आश्वासन

हमें दिल से गाने के लिए कहा गया है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। यह किसी

ऐसे व्यक्ति द्वारा हो सकता है जो अकेला हो, किसी और के साथ, किसी छोटे समूह में, पूरी मण्डली की सामूहिक आराधना में हो।

गाने से कई लाभ मिल सकते हैं। इससे परमेश्वर और दूसरों के साथ निकट सम्बन्ध बनाने में सहायता मिल सकती है। गाना व्यक्तिगत समस्याओं को कम करके, आत्मिक संगति देकर मसीही जीवन के लिए प्रोत्साहन दे सकता है। मसीही गानों के सुन्दर शब्द हमें अपनी और दूसरों की आत्माओं को ऊपर उठाते हुए परमेश्वर के मार्गों का निर्देश दे सकते हैं। गाना अपने या दूसरों के प्रति कठोर भावनाओं को खत्म कर सकता है। यह आराधना सेवा के लिए या दिन भर के लिए माहौल बना सकता है।

गाने में अधिक से अधिक डालने और इससे अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए हमें इस बात में सचेत होना आवश्यक है कि हम परमेश्वर के साथ संवाद कर रहे हैं। हमें उसके होने की वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए और विवेकपूर्ण ढंग से गीत से असम्बन्ध विचारों को निकाल देना चाहिए। गाते हुए हमें परमेश्वर की उपस्थिति में होने के अर्थ पर ध्यान करना चाहिए और प्रभु के पास अपने सम्बन्ध पर विचार करना चाहिए। हमें परमेश्वर की महानता के सम्बन्ध में अपनी योग्यता का अहसास होना आवश्यक है। परमेश्वर की ओर से मिले लाभों और सहायता पर ध्यान करने से हमें उसकी भलाई और दयालुता और उस पर अपनी निर्भरता को समझने में सहायता मिलेगी।

हमें परमेश्वर के प्रति भक्ति का व्यवहार ही विकसित करना आवश्यक नहीं है बल्कि हमें अपने आस पास के लोगों को भी आत्मा में निकटता बढ़ानी आवश्यक है। इससे हम गाते हुए शिक्षा को और अधिक जानकर एक दूसरे को और अच्छी तरह समझा सकेंगे। गीतों के उपदेश को समझने के लिए उनके शब्दों को पहले से पढ़ लेना सहायक हो सकता है। हमें यह विचार करना चाहिए कि गीत हमें और दूसरों को कैसे लाभ दे सकते हैं। गीत के बोल मौके के हिसाब से होने आवश्यक हैं।

चाहे हम सामूहिक आराधना में ही भाग क्यों न ले रहे हों, आराधना एक निजी मामला है। दूसरा कोई हमारे लिए आराधना नहीं कर सकता। हमें यह समझना आवश्यक है कि हम आराधना केवल तभी कर रहे होते हैं जब आत्मिक तौर पर वहां हों।

गाने में अगुआई करने वाला

गाने में अगुआई करने वाले की भूमिका इस निर्देश में पता चलती है। ''सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:40)। किसी न किसी को शब्दों, सुर और लय के साथ गीत का आरम्भ करना आवश्यक है। यह कौन, उसे कहां खड़े होना चाहिए, गीतों का चयन कैसे करना चाहिए, गाये जाने वाले गीतों को दूसरों को कैसे बताना चाहिए या सुर कैसा होना चाहिए इसके बारे में नहीं बताया गया है। क्यों इन मामलों में परमेश्वर का कोई सम्बन्ध नहीं था इसलिए ऐल्डरों (या जहां मण्डली में ऐल्डर न हों वहां सदस्यों) को अपनी समझ के अनुसार यह प्रबन्ध करने की छूट है।

गाने में अगुआई करने वाला गाने को कई तरह से गा सकता है। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके द्वारा चुने गए अधिकतर गीत मण्डली गा सकती है और ऐसे कठिन गीत जिन्हें

सब न गा सकें उन्हें शामिल न किया जाए। इसके साथ ही उसे हर आराधना सभा में उन्हें कुछ गीतों में से कुछ भागों और कोर्सों को अलग-अलग चुनना चाहिए। नये भजनों को गाने का अभ्यास आराधना के अलावा और समय में किया जाना चाहिए।

गीतों का चयन करने वाले को दूरदृष्टि का इस्तेमाल करना आवश्यक है। अवसर के अनुकूल गीतों का चयन करना उसकी जिम्मेदारी है। वह गीतों को एक विषय के आस-पास रख सकता है, जो दिए जाने वाले संदेश से मेल खाती हो।

आराधना सेवा के दौरान अगुआई करने वाला मण्डली को गाने में आराधना करने के लिए कहता है। अर्थ भरे वाक्यांशों की ओर ध्यान दिलाकर और गाने में पाए जाने वाले कठिन शब्दों के विचारों का अर्थ समझाकर वह आराधना करने वालों को अच्छा माहौल बनाने में सहायक हो सकता है। उसे गाने के मूड़ के अनुसार ताल और आवाज़ बिठानी चाहिए। उसे हंसी या अन्य बातों से बचना चाहिए जिससे आराधना से ध्यान भंग हो।

यह याद रखते हुए कि वह एक अगुआ है, न कि कलाकार, जिस कारण उसे गाने में एक्टिंग करते हुए अगुआई नहीं करनी चाहिए। उसकी आवाज़ इतनी ऊंची होनी चाहिए कि सबको सुनाई दे सके, पर इतनी ऊंची भी नहीं कि सब उसकी ओर देख रहे हों। आराधना में मण्डली की अगुआई करने में उसका उद्देश्य परमेश्वर को ऊंचा करना है न कि अपने आप को।

मण्डली

गाने को अर्थभरपूर और ऊंचा उठाने वाला बनाने के लिए मण्डली कई बातें कर सकती है। सम्भव होने पर गीतों की किताब के बिना गाने से आराधना और अच्छी हो सकती है। घर में गाकर गीतों की किताब से हम गीत सीख सकते हैं।

आराधना करने वालों के लिए गीतों के शब्द मन से व्यक्त करना आवश्यक है। हमें परमेश्वर पर और मण्डली के दूसरे लोगों की आवश्यकताओं पर ध्यान लगाना चाहिए।

गाने में अगुआई करने वाले को देखकर मण्डली एक सुर में गा सकती है। हर सदस्य को अपनी आवाज अपने साथ के लोगों से ऊंचा सुनाने के बजाय दूसरों के साथ अपनी आवाज मिलाने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरों के साथ बैठने से आवाज और दिल मिलाने में सहायता मिल सकती है।

आराधना में गाने के लिए विवेकपूर्ण प्रयास आवश्यक हैं। इस तथ्य का कि हम गा रहे हैं यह अर्थ नहीं है कि हम आराधना कर रहे हैं। केवल शब्दों पर ध्यान लगाकर और प्रभु के लिए अपने-अपने सुर मिलाकर गाने पर ही हम अपने गाने के द्वारा उसकी आराधना कर रहे होते हैं।

मौखिक संगीत

पुराने नियम की आराधना में बेशक गीत के अलग-अलग वा7 यंत्रों या साज़ों का इस्तेमाल किया जाता था, परन्तु आरम्भ से ही मसीही लोग ए कैपेला यानी बिना साज़ों के गाते थे। ''ए कैपेला का अर्थ है बिना साज़ों के। [ital.*: a,* के ढंग में जमा *cappella,* चैपल, क्वायर।]''[12]

यह सोलहवीं शताब्दी के काल तक और उसको शामिल करने की बात है जब कलीसिया

का संगीत आवाजों के साज़ के बिना के लिए लिखा जाता था। ... इस कारण आज कल भजन के संगीत का इस्तेमाल ''बिना साथ देने'' के सामानार्थक के रूप में किया जाता है।[3]

''ए कैपेला'' की अभिव्यक्ति ही इसलिए बनी क्योंकि आरम्भिक कलीसिया केवल मौखिक संगीत ही गाती थी।

नये नियम के काल के दौरान *psalmos* या मूल क्रिया *psallo* में गाने के साथ साज़ नहीं था। यूनानी में *psallo* अर्थ कमान की डोरी की तरह वीणा के तार को छेड़कर टनकार करना, खींचना या कम्पाना। कोयनि यूनानी साधारण लोगों द्वारा बोली जाने वाली और नये नियम की यूनानी भाषा, उच्च दर्जे की यूनानी भाषा से अलग है। *psallo* के विकास में इस शब्द का इस्तेमाल गाने के साथ दिल के तार छेड़ने में या मौखिक संगीत में मन के तार छेड़ना है। पौलुस ने इसका इस्तेमाल बाद वाले अर्थ अपने-अपने मन में कीर्तन करते (इफिसियों 5:19) के अर्थ में किया। एक लैक्सिकन के हाल ही के संस्करण[4] जिसमें क्रिया *psallo* की परिभाषा में वाद्य-संगीत शामिल है, सम्मानित विद्वानों और यहां तक कि अपने आप से भी सहमत नहीं है।

मसीही गाने में भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16) शामिल होना आवश्यक है। इन तीनों शब्दों को बांटने वाली रेखा आसानी से नहीं बनती। वे सम्भवतया गीत के रूप हैं। कइयों ने सुझाव दिया है ''भजन'' का अर्थ पुराने नियम के भजन या साज़ों के साथ गाये जाने वाले गीत हैं। मसीही लोग अपने गीतों में भजनों के सुन्दर विचारों को शामिल तो करते हैं, पर कुलुस्सियों 3:16 में निर्देश है कि ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो।'' भजनों में मसीह की बातें नहीं हैं।

केवल मौखिक संगीत का अधिकार

नया नियम आराधना में गाने का अधिकार देता है। गाने में बाजों को जोड़ने वाले उसे जोड़ रहे हैं, जिसका अधिकार नहीं दिया गया है। नये नियम की एक भी आयत मसीही लोगों को साज़ के साथ गाने या आराधना में साज़ बजाने का निर्देश नहीं देती।

मसीही लोगों के लिए संगीत की एकमात्र पसन्द ''गाना'' है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। यह तथ्य कि गाने की और कोई किस्म नहीं चुनी गई, गाने को सीमित कर देती है। हमें साज़ों को जोड़ने का कोई अधिकार नहीं है।

यीशु ने संगीत की वह किस्म चुनी है, जिसका इस्तेमाल हमें करना है, सो हम उस पसन्द तक सीमित हैं।[5] गाने की किस्म या शैली के बारे में उसने कोई पसन्द नहीं बनाई। गाने की अलग अलग किस्मों और संगीत के प्रबन्धों को गाने की हमें छूट है। पंचम स्वर में, ऊंचे स्वर में, टैनोर में या धीमे स्वर में गाने से ''गाना'' की आज्ञा में कुछ जुड़ता नहीं है और न ही यह यीशु के अधिकार का उल्लंघन है, क्योंकि उसने इन क्षेत्रों में कोई पसन्द नहीं बनाई है।

यीशु की किसी शिक्षा के आधार पर आराधना में साज़ों को शामिल नहीं किया जा सकता। वे केवल मनुष्यों की परम्पराओं के आधार पर शामिल हो सकते हैं। परमेश्वर की आराधना करने में मनुष्यों की परम्पराएं किसी काम की नहीं है कारण उन्हें नकार दिया जाना आवश्यक है (मत्ती

7:7-13; कुलुस्सियों 2:8; तीतुस 1:14)।

व्यवस्था के अधीन आराधना में साज़ क्यों इस्तेमाल किए जाते थे ?

मन्दिर की आराधना में साज़ों का इस्तेमाल होता था। कइयों ने तर्क दिया है कि यदि परमेश्वर ने व्यवस्था से पहले और व्यवस्था के अधीन उन्हें स्वीकार किया, तो उसे अब भी उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा। बात कुछ बनी नहीं। परमेश्वर ने मसीही युग से पहले कई बातों को ग्रहण किया था जैसे आराधना केवल यरूशलेम में ही होती थी, बहुपत्नियां, आराधना में पशुओं का बलिदान, दशमांश देना आवश्यक, यहूदियों के आवश्यक पर्व और धूप उदाहरण हैं। नई वाचा लाने से पुरानी व्यवस्था को उसकी आज्ञाओं, विधियों और रीतियों सहित हटा दिया गया (गलातियों 3:24, 25; इफिसियों 2:14, 15; इब्रानियों 7:19; 10:9)।

व्यवस्था का इस्तेमाल उनका न्याय करने के लिए किया जाएगा जो इसके अधीन रहे (रोमियों 2:12)। इस युग में हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं (रोमियों 6:14, 15), सो हमारा न्याय व्यवस्था के अनुसार नहीं होगा। हमारा न्याय यीशु के वचन के द्वारा होगा (यूहन्ना 12:48)। कारण मसीही लोगों को यह तय करने के लिए कि स्वीकार्य आराधना क्या है पुराने नियम को मानने की आवश्यकता नहीं है। यह जानने के लिए कि परमेश्वर की आराधना में हमें क्या इस्तेमाल करना है कि वाचा का अध्ययन करना आवश्यक है। आराधना के भाग के रूप में साज़ों की आज्ञा नहीं दी गई इसलिए हमारी आराधना में उनका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य स्वर्ग की बात करते हुए साज़ों का उल्लेख क्यों है ?

क्या प्राकाशितवाक्य की पुस्तक में वीणाओं का उल्लेख (5:8; 14:2, 3; 15:2) कलीसिया में साज़ों के इस्तेमाल को उचित ठहरा देता है ? जो कुछ यूहन्ना ने देखा वे मसीही रीतियां नहीं बल्कि किसी और बात का प्रतिनिधित्व करते प्रतीक थे। उसने स्वर्ग में एक मेमना (5:6); घोड़े (6:2-8); श्वेत वस्त्र और खजूर की डालियां (7:9); बादल और धनुष (10:1); गर्ज (10:3); सूरज, चांद और बारह तारे (12:1); सीनै पहाड़ (14:1) और बहुत सी और आकृतियां देखीं। इन सब संकेतों का अर्थ अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए।

यूहन्ना ने यहूदी आराधना के प्रतीकों का इस्तेमाल किया। जिसमें से कोई भी मसीही आराधना का भाग नहीं है: धूप से भरे सोने के कटोरे (5:8), बलिदान की वेदी (6:9), मन्दिर (7:15; 15:8), सोने की धूपदानी (8:3, 4), सोने की वेदी (8:3, 5; 9:13), धूप का धुआं (8:4), वेदी की आग (8:5), वेदी के सींग (9:13), वाचा का संदूक (11:19), सिय्योन पहाड़ पर भीड़ (14:1) देखी। वीणाओं की तरह ही यह भी पुराने नियम की आराधना की चीज़ें हैं, न कि नये नियम की आराधना की।

सवर्ग की हर चीज़ आत्मिक और अनन्तकालिक है; कुछ भी भौतिक और अस्थाई नहीं है (2 कुरिन्थियों 4:18)। प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर की वीणाएं (15:2) सांसारिक वीणाएं नहीं हैं। परमेश्वर की आराधना में वीणाओं के बजाने की बात किसी आयत से साबित नहीं होती (5:8; 14:2, 3; 15:2)। यूहन्ना ने केवल गाने को ही पहचाना। उसने आवाज़ों को बहुत से नदियों, गर्ज, वीणाओं पर वीणा बजाने वालों से मिलाया (14:2); परन्तु, नदियां, गर्ज, और वीणाएं वहां नहीं

थीं। यहां पर वीणाओं का उल्लेख साज़ों के इस्तेमाल को वैसे ही अधिकृत नहीं करता जैसे हमें अन्य यहूदी रीतियों के इस्तेमाल करने की छूट है।

क्या हमें गाने में साज़ जोड़ने की मसीही छूट है ?

मसीह में मिली स्वतन्त्रता क्या हमें अपनी आराधना में गाने के साथ बाजों को जोड़ने की छूट देती है ? यह मानते हुए कि मसीही उदारता हमें परमेश्वर की पसन्द में जोड़ने की अनुमति देती है 1 कुरिन्थियों 10:30 में 1 कुरिन्थियों 10:23 वाले पौलुस के तर्क को गलत समझना है। उस भाग अर्थात 10:18-33 में पौलुस जो नियम के अनुसार है वह करने पर चर्चा कर रहा था न कि उसकी जो नियम के अनुसार नहीं है। उसके कहने का अर्थ था कि विशेष परिस्थितियों में हमारे लिए उपयुक्त हर चीज़ करना हो सकता है कि समझदारी न हो। हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि जो लोग हमारे साथ हैं, उनकी भलाई के लिए क्या आवश्यक है (10:24)।

जो हमारे लिए उचित है यदि वह दूसरों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है उसे करना न समझी है (1 कुरिन्थियों 10:31, 32)। पौलुस यह तर्क नहीं दे रहा था कि उन बातों को करना चाहिए जो यीशु ने नहीं सिखाई। बल्कि वह यह सिखा रहा था कि यदि दूसरों के लिए रुकावट हो तो हमें उससे जिसकी अनुमति है, करने से परहेज करना चाहिए।

सारांश

गाना आराधना के सबसे बड़े अनुभवों में से एक हो सकता है। गाने में हम परमेश्वर की महिमा कर सकते, दूसरों को ऊंचा उठाकर उन्हें समझा सकते हैं और अपने मनों को सुधार सकते हैं। गाने के द्वारा हम मसीही जीवन के कई पहलू एक दूसरे को बता सकते हैं। गाने में स्तुति और आराधना का हमारा केन्द्र परमेश्वर होना चाहिए।

हमें अपनी आराधना की बातों में केवल वही चीज़ें शामिल करनी चाहिए जिनका अधिकार यीशु ने दिया है। मसीही लोगों के लिए संगीत की जिस किस्म की आज्ञा है वह केवल गाना है। इसलिए हमें गाने में साज़ या मनुष्य द्वारा आरम्भ की किसी और बात को नहीं जोड़ना चाहिए। हमारी आराधना परमेश्वर को तभी पसन्द आएगी यदि हम वही करें जिसकी उसने अनुमति दी है।

टिप्पणियां

[1]नये नियम में यूनानी शब्द का अनुवाद ''गाना'' *ado* (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16; प्रकाशितवाक्य 5:19; 14:3; 15:3), *humneo* (मत्ती 26:30; मरकुस 14:26; प्रेरितों 16:25; इब्रानियों 2:12) और *psallo* (रोमियों 15:9; 1 कुरिन्थियों 14:15; इफिसियों 5:19 [''making melody'']; याकूब 5:13)। [2]*अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* तीसरा संस्क. (2001), एस.वी. ''ए कैपेला।'' [3]*द ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी,* दूसरा संस्क. (1989), एस.वी. ''ए कैपेला।'' [4]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्क. संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो, 2000), 1096. पृष्ठ 169 पर ''आज आराधना में की जाने वाली बातों का अधिकार'' लेख देखें।